मोनपा भाषा का हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

सोनाम वाङ्गू

क्षेत्रफल की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत का सबसे बड़ा राज्य अरुणाचल प्रदेश है। यहां मुख्यतः 26 समुदायों का वास है। यह एक बहुभाषी राज्य है। यहां समुदायों के नाम के आधार पर भाषाओं का नामकरण हुआ है। सभी सामुदायिक भाषाओं की कोई लिपि नहीं है, सिवाय मोनपा समुदाय और खामती समुदाय के। मोनपा समुदाय जहाँ भोटी लिपि (Bhoti script) को अपना रहे हैं, वहीं खामती समुदाय ताई लिपि (Tai script) अपना रहे हैं। दोनों ही समुदाय बौद्ध धर्मी हैं। खामती समुदाय जहां हीनयान संप्रदाय से है, वहीं मोनपा समुदाय महायान संप्रदाय से। इसके अलावा अरुणाचल में मेम्बा समुदाय भी महायान संप्रदाय से हैं और सिङफो समुदाय भी हीनयान संप्रदाय से हैं। इन सभी समुदायों में प्राचीन समय से दोनों तरह की लिपियों का प्रयोग बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन हेतु किया जाता रहा है। इस कारण खामती समुदाय में भंते ही इस ताई (Tai) लिपि का प्रयोग करते हैं। वहीं मोनपा समुदाय में भी भिक्षु और भिक्षुणी ही यानी लामा और आनी ही भोटी लिपि का प्रयोग करते हैं। प्राचीन समय में शिक्षा का आधार धर्म ही रहा है। इस कारण बौद्ध धर्म के प्रवेश के साथ ही इन लिपियों का प्रवेश भी इन समुदायों में हुआ है। धर्म से संबंधित कार्यों और ग्रंथों को वर्तमान में भी इसी भोटी लिपि एवं ताई लिपि का ही प्रयोग करके पूजा विधि संपन्न की जाती है। इस कारण भंते, भिक्षु, भिक्षुणी तक ही सीमित होकर रह गई हैं। डॉ. ग्रियर्सन ने इन भाषाओं को तिब्बती-बर्मी परिवार के वर्ग से माना है। एक भाषा परिवार की भाषाओं में भी बहुत भिन्नता है। संसार के प्रत्येक प्राणी और जीव की अपनी वाणी है, अपनी भावनाएं हैं। जब भावनाओं का ज्वार फूटता है, तो वाणी से शब्दों का प्रवाह खुद निकलता है। संसार में सभी जीवों से मानव श्रेष्ठ जीव है। उसने अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए शाब्दिक भाषा का विकास किया। इस प्रकार भाषा प्रतीकात्मकता से विकसित होते हुए मौखिक, संकेत, लिखित, ब्रैल व ऑनलाइन तक आ पहुंची। संस्कृत से जन्मी भारत की सभी भाषाएं बहनें हैं, किंतु जिस भाषा को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का पद दिया गया उसका सम्मान करना हर भारतवासी का कर्तव्य होना चाहिए। क्योंकि कोई एक भाषा अपने देश के गौरव का प्रतिनिधित्व करते हुए देश की सांस्कृतिक संवाहिका बन सकती है और यह भाषा बनी हिंदी। हिंदी मात्र दस राज्यों (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, बिहार, दिल्ली, छत्तीसगढ़ और उत्तराखण्ड) की भाषा नहीं, अपितु हिंदी पूरे देश की भाषा है, जिसे संपर्क भाषा कहना अनुचित नहीं। भाषा समाज की अमूल्य वस्तु है उसका प्रारंभ भी तभी हुआ होगा जब समाज का। भाषा से मनुष्य का अंत: संबंध है। वह एक संप्रेषण का माध्यम है। भाषा का अर्थ ही बोलना या कहना होता है। अर्थात जिसे बोला जाए वह भाषा है। भाषा ही जातीय और क्षेत्रीय अस्मिता को बनाए रखती है। गांधी जी मानते थे कि किसी देश का व्यक्तित्व अपनी भाषा से ही बनता है, किसी विदेशी भाषा से नहीं। भाषा एक ऐसा सशक्त साधन या माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति और व्यक्ति तथा व्यक्ति और समुदाय में संवाद की प्रक्रिया कायम होती है।

बोली भाषा का सर्वाधिक सीमित व लघु रूप होता है, यह एक छोटे से क्षेत्र के मुख्य रूप से घरेलू बोलचाल की भाषा होती हैं। स्थान के अनुसार बोली के कई भेद हो जाते हैं, जिनमें थोड़ा बहुत अंतर होता है।

जब कोई बोली धार्मिक श्रेष्ठता अथवा भौगोलिक विस्तार के कारण किसी प्रांत या उप प्रांत में प्रचलित हो जाती है, तब उसे विभाषा या उपभाषा कहते हैं। यह एक प्रदेश के विशाल भाग में सामान्य बोलचाल, सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों में प्रयुक्त होती है। किसी प्रदेश में प्रयुक्त होने वाली कोई विभाषा ही उन्नति करते-करते भाषा अर्थात परिनिष्ठित या साहित्यिक भाषा का पद प्राप्त कर लेती है। जैसे हिंदी में खड़ी बोली मेरठ, बिजनौर आदि की भाषा होते हुए भी साहित्यिक पद पर प्रतिष्ठित हुई और राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत होने के कारण राष्ट्र पद पर भी अधिष्ठित हुई है। एक भाषा क्षेत्र में कई विभाषाएं होती हैं या हो सकती है। जैसे उत्तर प्रदेश के हिंदी भाषी क्षेत्र में खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, बुंदेली, भोजपुरी आदि विभाषाएं हैं। इन सभी को मिलाकर हिंदी भाषा क्षेत्र बना है।

विभाषा के लिए आवश्यक नहीं है कि उसमें उच्च स्तर के साहित्य की रचना हुई हो या होती हो। बोली और विभाषा का मूल अंतर क्षेत्र के विस्तार का होता है। बोली एक सीमित क्षेत्र में और विभाषा अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होती है। एक विभाषा के क्षेत्र में कई ऐसी बोलियां बोली जाती है, जिनके बोलचाल के रूप में परस्पर थोड़ा-सा अंतर होता है। विभिन्न विभाषाओं में से जब कोई एक भाषा अपने गुण, गौरव, साहित्यिक अभिवृद्धि आदि के दृष्टि से काफी उन्नत और परिमार्जित हो जाती है, तब वह भाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो जाती है, तब वह भाषा संज्ञा प्राप्त करती है।

भाषा की परिभाषाओं के आधार पर हिंदी भाषा की जो प्रक्रिया है, वही मोनपा भाषा के लिए भी प्रयुक्त होती है। मोनपा बोली भी एक घरेलू बोल चाल की भाषा के आधार पर तावांग ज़िले में ही मॉगो मोनपा, पाङचिन मोनपा और तावांग मोनपा का प्रयोग होता है। इन तीनों क्षेत्रों की मोनपा बोलियों में थोड़ा बहुत अंतर होता है, इसी के साथ मोनपा बोली को भौगोलिक विस्तार और उनकी भाषा में भिन्नता के कारण छ: उपसमूह में विभाजित किया जा सकता है। इनमें प्रमुख रूप से तावांग मोनपा के साथ, दिरांग मोनपा, लिश मोनपा, भूट मोनपा, खलाकताङ मोनपा और पाङचिन मोनपा आदि हैं। इन सभी की बोलियां मोनपा बोली के रूप में विकसित होकर एक प्रदेश के विशाल भाग में सामान्य बोलचाल, सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों में प्रयुक्त होकर धीरे-धीरे भाषा की श्रेणी में स्थान प्राप्त कर रही है। मोनपा बोली भी धार्मिक श्रेष्ठता और व्यापक होकर यह एक विभाषा के रूप में स्थान पा लेता है। ये विभाषा एक प्रदेश के विशाल भाग में सामान्य बोलचाल, सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों में प्रयुक्त होती है। यही विभाषा ही उन्नति करके आज वर्तमान अरुणाचल प्रदेश में एक भाषा के रूप में विकसित हुई है, जो संपूर्ण तावांग ज़िले के साथ पश्चिम कामेङ ज़िले के दिराङ, कलाकताङ, लिश और भूट अंचलों में बोली जाती हैं। जिस तरह उत्तर प्रदेश के हिंदी भाषी क्षेत्र में खड़ीबोली, ब्रज, अवधी, बुंदेली, भोजपुरी आदि विभाषाएं हैं। इन सभी को मिलाकर विशाल हिंदी भाषा क्षेत्र बना है, ठीक उसी तरह मोनपा भाषा में भी मागो मोनपा, पाङचिन मोनपा, तावाङ मोनपा, दिराङ मोनपा, कलाकतांग मोनपा, लिश मोनपा, भूट मोनपा आदि विभाषाएं हैं। इन सभी को मिलाकर मोनपा भाषा क्षेत्र विशाल बना है। पाङचिन मोनपा अर्थात ज़िमिथाङ वाले क्षेत्रों की मोनपा बोली में उत्तर-पूर्वी भूटान की भाषा का प्रभाव है जिसे 'दकपा नेङपा केत' कहा जाता है। तावाङ क्षेत्र के मोनपा बोली में शब्दों का प्रयोग शुद्ध रूप में है, वहीं मागो क्षेत्र के मोनपा बोली में दक्षिणी तिब्बतीयन शब्दों का प्रयोग ज़्यादा है। वह मोनपा एवं तिब्बतीयन के मिश्रित शब्दों का प्रयोग ज़्यादा करते हैं। उसी तरह दिराङ मोनपा की बोली पर बोरो और छङला /त्सङला (Tsangla) भाषा का

प्रभाव है। मोनपा भाषा पर खासकर तिब्बतीयन, भूटानी और संस्कृत शब्दों का प्रभाव ज़्यादा है। इस कारण मोनपा भाषा का शब्द भंडार अत्यंत व्यापक है।

हिंदी भाषा एवं मोनपा भाषा का अध्ययन हम निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर कर सकते हैं-

वर्णमाला के आधार पर :

मोनपा भाषा के स्वर-

स्वत: उच्चरित ध्वनियां स्वर हैं। स्वर उन वर्णों को कहते हैं, जिनका उच्चारण स्वतंत्रता से होता है और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं। हिंदी भाषा में मूल रूप से ग्यारह स्वर होते हैं। ग्यारह स्वर के वर्ण अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि। जबकि मोनपा समुदाय की भाषा में चार स्वर होते हैं। चार स्वर के वर्ण इ, उ, ए, ओ आदि। इनका प्रयोग ध्वनि ग्रामिक स्तर पर होता है। ये स्वर समान ध्वन्यात्मक परिवेश एवं स्वल्प अंतर युग्मों में अर्थभेदक हैं। इनमें इ, उ, ए, ओ प्रमुख हैं। इस भाषा में संयुक्त स्वर में दीर्घ रूप ऐ, औ प्रचलन में नहीं है। ह्रस्व स्वर इ, उ दीर्घ स्वर ए, ओ का प्रचलन है। मूल स्वरों का ह्रस्व एवं दीर्घ रूप प्रारंभ, मध्य एवं अंत में प्रयुक्त होता है। संयुक्त स्वरों का दीर्घ रूप ऐ, औ का अभाव है। संयुक्त स्वरों का ह्रस्व रूप प्रारंभ, मध्य एवं अंत में उपलब्ध होता है। तत्सम स्वर ऋ के ह्रस्व एवं दीर्घ दोनों रूपों का अभाव है। उपलब्ध समस्त स्वर स्वतंत्र रूप में एवं व्यंजनों के साथ प्रारंभ, मध्य एवं अंत में व्यवहृत होते हैं।

मोनपा भाषा के व्यंजन-

व्यंजन ध्वनियां स्वत: उच्चरित नहीं होती हैं। इनके उच्चारण में स्वरों का सहयोग अपेक्षित है। व्यंजन वे वर्ण हैं जो स्वर के सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते। हिंदी भाषा में कुल 39 व्यंजन होते हैं, जिनमें 33 व्यंजन मानक हिंदी व्यंजन होते हैं, चार संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) होते हैं। क से ज्ञ तक 36 अक्षर होते हैं। मोनपा भाषा में इनकी संख्या 30 है। उच्चारण, प्रयत्न, स्थान के आधार पर इनका स्वरूप विवेच्य है-

क (ka) ख (kha) ग (g) ङ (Nga)
च (cha) छ (chha) ज (ja) ञ (Nya)
त (ta) थ (tha) द (da) न (na)
प (pa) फ (fa) ब (ba) म(ma)
च (cha) छ (chha) ज (dza) व (wa)
ज्ह (zha) ज़ा (za) आ (a) य (ya)
र (ra) ल (la) श (sha) स (sa)
ह (ha) आ (a)

प्रत्येक चार-चार वर्णों का समूह व्यंजन है। स्पर्श ध्वनियों के समूह में यानी क से लेकर म तक में –

'क' वर्ग में 'घ' ध्वनि का अभाव

'त' वर्ग में 'ध' ध्वनि का अभाव

'प' वर्ग में 'भ' ध्वनि का अभाव है।

च, छ, ज, व, ज्ह, की जगह अतिरिक्त ध्वनि का प्रयोग होता है, जो हिंदी व्यंजनों में नहीं हैं। मोनपा भाषा में 'ट' वर्ग में (ट, ठ, ड, ढ, ण) की ध्वनियों का अभाव है। अनुनासिक व्यंजनों में ङ एवं ञ का प्रयोग ज़्यादा होता है। अर्द्ध स्वर 'य' और 'व' दोनों का प्रयोग है। संयुक्त अक्षर क्ष, त्र, ज्ञ, का अभाव है।

वाक्य विन्यास के आधार पर :

मोनपा भाषा में संज्ञा-

भाषिक संरचना की प्रक्रिया में संज्ञा रूप तालिका एवं क्रिया रूप तालिका किसी भी भाषा का मेरुदण्ड हुआ करती है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति का विकास होता चलता है, परस्पर संपर्क संस्थाओं के निर्माण एवं तकनीकी, ज्ञान-विज्ञान, उद्योग जैसे संदर्भों से जुड़कर संज्ञा पदों की संख्या व्यक्ति की बोली स्तर पर बढ़ती जाती है। अंग्रेजी की क्षेत्रीय प्रचलन, सरकारी कामकाज में उसका व्यवहार एवं शिक्षा संस्थाओं में अभिव्यक्ति के धरातल पर उसके प्रयोग के कारण ऐसी संज्ञा शब्दावली भी यहां परस्पर संपर्क एवं संक्रमण के कारण प्रयुक्त होती दिखाई पड़ती है। यह अनुकरणमूलक प्रवृत्ति के कारण क्षेत्रीय संदर्भों से जुड़ी हैं जैसे- टी.वी, फोन, पेंसिल, बस, अलमारी, स्टेशन आदि। इसी तरह हिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रचलित नाम सूचक शब्दावली को लिया जा सकता है, जो प्रवासी हिंदी भाषियों के कारण यहां पहुंचती है तथा उसी रूप में आज प्रयुक्त है। कहीं ध्वन्यात्मक परिवर्तन के साथ इन संज्ञाओं का प्रयोग अपनी उच्चारणगत विशिष्टता का बोध कराता है, यथा –

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
समोसा	समोसा
छोले	छोले
करेला	करेला
भिण्डी	बिन्डी
दाल	दल
आम	अम
गाजर	गाजर
पपीता	पपीता आदि।

संज्ञा को बताने वाले स्वर के अंत एवं व्यंजन के अंत दोनों संदर्भों के अनुकूल प्रयोग होता है। संबंधसूचक शब्दावली सांस्कृतिक अवस्था पर प्रकाश डालती है। जहां बुआ, फूफी, सासू, मामी सबके लिए एक ही शब्द प्रचलित है और वह है 'अन'। इसी तरह संज्ञा का व्यवहार 'अइ' नानी, दादी दोनों के लिए होता है। 'मेम' संज्ञा पद नाना, दादा दोनों के लिए समान भाव से प्रयुक्त होकर एक विशिष्ट पारिवारिक व्यवस्था का बोध कराता है। स्वरांत संज्ञा प्रतिपादकों में अकारांत शब्द विशेष रूप से चलन में हैं।

हिंदी भाषा	मोनपा भाषा
अकेला	थिमा
दुकेला	नइमा
दोषारोपन	ङानपा
नया	सरपा
बीमारी	नात्पा आदि।

जैसे शब्द अधिक प्रयुक्त हैं, जिसमें व्यंजन संयोग की प्रवृत्ति पर्याप्त है। ह्रस्व इकारांत, एकारांत, उकारांत संज्ञाओं का व्यवहार भी मोनपा भाषा में मिलता है।

ह्रस्व इकारांत उदाहरण

हिंदी भाषा	मोनपा भाषा
भैया	अचि
भिक्षुणी	अनि
दादी	अइ

एकारांत उदाहरण :

लेकिन	शिन्तरे
कहाँ	गचे
हर तरफ	गाइ-किमे

उकारांत उदाहरण :

छोटा	प्रिउ/प्रिशो
भारी	लिउ/लिशो
खाली समय	ब्रे-नोउ
सकने वाला	काइ-नसु
गायब होना	क्लो गयु आदि।

मोनपा भाषा में महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग सर्वथा अभाव है। इस कारण संज्ञा प्रतिपादक के अंत में केवल अल्पप्राण ध्वनियों का प्रयोग इस समुदाय के भाषा में पाया जाता है। अनुनासिक ध्वनियों में 'ङ' और 'ञ' में प्रयुक्त होने वाली संज्ञा पदावली की लंबी सूची है –

हिंदी भाषा	मोनपा भाषा
हम लोग	ङरबा/ङतङ नङ
मेरा	ङोक
मैं	ञे
लोग	मिनङ
हजार	तोङ
इस साल	दानिङ

पिछले साल	निनिङ
कल	दङ

संज्ञा रूप तालिका में मोनपा समुदाय के वक्ता 'ट' वर्गीय ध्वनियों का व्यवहार सामान्यतया कम करते हैं।

मोनपा भाषा में सर्वनाम-

सर्वनामों का व्यवहार संज्ञा पदों के प्रतिनिधि की तरह होता है। संज्ञा की तरह सर्वनाम का भी लिंग निर्णय संदर्भ में या वाक्यात्मक स्तर पर संभव होता है। रूप गठन की दृष्टि से लिंग, वचन एवं कारकीय स्थितियों में सामान्य परिवर्तन हुआ करते हैं। मोनपा समुदाय की बोलियों में लिंग के आधार पर कोई भी परिवर्तन नहीं है परंतु वचन एवं कारकीय प्रक्रिया में 'पर' प्रत्यय जुड़कर पद बन जाते हैं। मोनपा भाषा में एकवचन एवं बहुवचन का हिंदी रूप ही प्राप्त होते हैं। हिंदी की तरह द्विवचन का यहां सर्वथा अभाव है। पुरुषवाची एवं निजवाची सर्वनाम 'आप' (इनङ) प्रचलन में है।

पुरुषवाची

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
एकवचन	एकवचन
मैं	ञे

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
बहुवचन	बहुवचन
हम	ङतङ

मोनपा भाषा में हिंदी भाषा की तरह आदर अर्थ एवं निरादर अर्थ एकवचन एवं बहुवचन रूप प्राप्त नहीं होते हैं–

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
एकवचन	एकवचन
तुम	इनङ
वह	बि
यह	उच
बहुवचन	**बहुवचन**
तुम लोग	इतङ
वे	बिर
ये	उच नङ

पुरुषवाची सर्वनामों के अतिरिक्त प्रश्नवाची सर्वनामों में विविधता है। यहाँ जीवधारियों के लिए एवं अन्य वस्तुओं के लिए प्रयोगों में भिन्नता है। मोनपा भाषा में 'नाङ' का प्रयोग बहुवचन में ही होता है।

उदाहरण-

एकवचन	**बहुवचन**
जीम (बिल्ली)	जीम नाङ (बिल्लियों)

रवी (कुत्ता)	खी नाङ (कुत्ते)
मीह आदमी	मिनाङ (आदमियों)

इन समस्त ही सर्वनामों में रूपांतरण ग्रहण करती हुई यह भाषा पुरुषवाची सर्वनामों की तरह विभक्तियां ग्रहण करती हुई सर्वनाम पदों का निर्माण करती हैं।

मोनपा भाषा में विशेषण:

विशेषण रूप तालिका अपने रूप-गठन में कोई भी रूपांतर विशेष नहीं लेती। यह सर्वनाम की ही भाँति रूपांतर रहित एवं रूपांतर सहित दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। इन विशेषणों को अर्थ के आधार पर गुण बोधक, परिणाम बोधक एवं संख्या बोधक कोटियों में विभक्त किया जा सकता है-

गुणबोधक: संज्ञा या सर्वनाम के गुण का बोध कराने वाली विशेषताओं को गुणबोधक से अभिहित किया जाता है। ऐसे विशेषणों से विशेष्य की विशेषता, अवस्था, स्थिति आदि की सूचना मिलती है। मोनपा भाषा में इसकी अधिकता दृष्टिगत होती है। ऐसे शब्द विशेष्य की विशेषता को प्रकट करने में पूर्णतया समर्थ हैं-

काल सूचक

हिंदी रूप	**मोनपा रूप**
नया	सरपा
पुराना	ञिङपा
अगला	जुक्पाचित
पिछला	नापाचित

स्थान सूचक

हिंदी रूप	**मोनपा रूप**
चौड़ा	थोर-च्छुर
मोटा	थेन्म
गहरा	तिङ रिंक
सीधा	राङक
टेढ़ा	क्योक्प

रंग सूचक

हिंदी रूप	**मोनपा रूप**
पीला	सिर्प
काला	म्लेङप
सफेद	ख्येर
लाल	लिउ

दशा सूचक

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
दुबला	केम्पा

गाढ़ा	गार्रप
गीला	शेरपा
सूखा	केमपा

परिमाण बोधक- संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण को बोध कराने वाले विशेषण इसी कोटि के हैं।

हिंदी रूप	**मोनपा रूप**
हल्का	यङक
पूरा	गाङ्प
कम	ञुङ्क
बहुत	यौर
इतना	उमतिन
कितना	गतिन

संख्याबोधक- विशेषण की संख्या का बोध कराने वाले विशेषण इस वर्ग में आते हैं।

गणनात्मक-

हिंदी रूप	**मोनपा रूप**
एक	थी
दो	नइ
तीन	सुम
चार	ब्ली
पाँच	लेङा
छह	ग्रो
सात	निस
आठ	गेत
नौ	दुगु
दस	ची

क्रमात्मक– एक या दो अथवा उससे आगे की पूर्णांक संख्याओं में पर प्रत्यय जोड़कर स्थितियों का बोध कराने वाले विशेषण हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। मोनपा भाषा में भी यह प्रवृत्ति उपलब्ध है। तिथियों की गणना के लिए प्रथमा, द्वितीया आदि प्रचलन में है, जिसमें 'चित्त' प्रत्यय को जोड़कर पूर्ण किया जाता है। इस समुदाय के लोग गुणात्मक विशेषणों का भी व्यवहार नहीं करते। गणना में सामान्य संख्याओं से परिचित होने के कारण इनमें पहाड़ा गिनने की प्रवृत्ति भी नहीं मिलती। उदाहरण –

हिंदी रूप	मोनपा रूप
पहला	थिमाचित
दूसरा	नइमाचित
चौथा	ब्लीमाचित
पंद्रहवाँ	चिलेङमाचित

इसी तरह क्रिया अर्थक संज्ञा में मूल धातु में 'उ' प्रत्यय जोड़कर मोनपा भाषा में क्रियार्थक संज्ञाओं के रूप निर्मित होते हैं। उदाहरण –

हिंदी रूप	मोनपा रूप
कराना	यक थसु
जलाना	तोत थसु
पिलाना	थोङ थसु
रुलाना	ङु थसु
हँसाना	गे थसु
डराना	प्लाक्याक थसु
नचाना	ब्रोक थसु
सुनना	ञन थसु

मोनपा भाषा में कारक:-

हिंदी में आठ कारकों का प्रयोग है, उसी प्रकार मोनपा भाषा में भी कारकों का प्रयोग पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग बोधक मूल एवं व्युत्पन्न संज्ञाएं अपनी कारकीय रचना में व्याकरणिक प्रत्ययों के साथ व्यवहृत होती हैं।

कर्त्ता कारक : वाक्य में जो शब्द काम करने वाले अर्थ में आता है, उसे कर्त्ता कहते हैं। जैसे- मोहन खाता है। इस वाक्य में खाने का काम मोहन करता है, अत: कर्त्ता मोहन है। संस्कृत का कर्त्ता ही हिंदी का कर्त्ता कारक है। वाक्य में कर्त्ता का प्रयोग दो रूपों में होता है-

पहला वहाँ जिसमें 'ने' विभक्ति नहीं लगती अर्थात जिसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुसार होते हैं। इसे अप्रत्यय कर्त्ता कारक कहते हैं। मोनपा भाषा में भी 'ने' विभक्ति नहीं लगती। उदाहरण के रूप में 'ताशी थोपचे जोउदुर अर्थात ताशी खाना खा रहा है। 'जोउदुर' यहाँ क्रिया है। दूसरा वह, जिसमें 'ने' विभक्ति लगती है। श्याम ने मिठाई खाई। इस वाक्य में क्रिया 'खाई' कर्म मिठाई के अनुसार आयी है। इसे व्याकरण में सप्रत्यय कर्त्ता-कारक कहते हैं। मोनपा भाषा में 'सी' प्रत्यय जोड़कर यहाँ 'ने' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण रूप- 'श्याम सी ञौक्पु ख्यासुम।

कर्म कारक : वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है। इसी तरह मोनपा भाषा में 'शे' विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण रूप :-

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
मैंने हरि को बुलाया।	ञेइ हरि शे शो ञेगु।
माँ ने बच्चे को सुलाया।	अमा सी अनुशे ञेइ थासुम।
पिता ने पुत्र को पुकारा।	अपा सी जोक्पो शे ज़ारूम।
लोगों ने चोर को मारा।	मिनङ सी कुन्माशे शे तेरूम।
हरि ने बैल को मारा।	हरि सी बात शे तेरूम।

करण कारक : वाक्य में जिस शब्द से क्रिया का बोध हो उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक के सबसे अधिक प्रत्यय चिह्न हैं। से, ने, द्वारा, के द्वारा, के जरिए, के साथ इत्यादि ही है। मोनपा भाषा में करण कारक में भी 'सी' प्रत्यय चिह्न के द्वारा ही करण कारक स्पष्ट होते हैं।

उदाहरण रूप :

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
उसने पत्र कलम से लिखा।	बि यिगा ञुगु सी ब्रियुम
शिशुपाल कृष्ण के द्वारा मारा गया।	शिशुपाल कृष्ण सी सोतुम।
वह कुल्हाड़ी से वृक्ष काटता है।	बि तेवन सी शेङ तुपतुम।
पेड़ से फल गिरा।	शेङक मर शिङतो देरूम।
मुझे अपनी कमाई से खाना मिलता है।	ञिशे ङनङक कले सी तोपचे थोपतुम।

संप्रदान कारक:

शब्द के जिस रूप से किसी के लिए कुछ देने या किसी के लिए कुछ किए जाने का बोध हो उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति के लिए 'को' आदि है। मोनपा भाषा में भी संप्रदान कारक का प्रयोग होता है। यहाँ 'शे' विभक्ति द्वारा संप्रदान कारक स्पष्ट होता है।

उदाहरण रूप-

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
माँ शिशु के लिए दूध ला रही है।	अमी अनुशे वोमा वोत्तुर।
यह पुस्तक अनिल को लौटा देना।	उच लोपदेप अनिल शे तउ बे।

अपादान कारक :

संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु से अलग होने का भाव प्रकट होते है, उसे अपादान कारक कहते है। इसकी विभक्ति चिह्न 'से' (पृथक) है। इसी तरह मोनपा भाषा में भी 'कु' और 'उक' प्रत्यय चिह्न से अपादान कारक का बोध होते है।

उदाहरण रूप –

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
हिमालय से गंगा निकलती है।	हिमालयुक गंगा जोङदुम।
वह घर से बाहर आया।	बि खेमुक फिसो रासुम।
लड़का पेड़ से गिरा।	जोक्पो शेङ-कु देरूम।

संबंध कारक:

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ संबंध या लगाव प्रतीत हो उसे संबंध कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति चिह्न का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी आदि है। मोनपा भाषा में भी संबंध कारक का बोध होता है, जिसे सी, वुक, ङ, इनङ आदि विभक्ति चिह्नों द्वारा प्रकट कराया जाता है।

उदाहरण रूप :

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
यह मेरा घर है।	उच ङोक खेम यीम।
राम ने शिव का धनुष तोड़ा।	राम सी शिवुक लीह बोतुम।
अपनी चाय लाओ।	इनाक जाह वोता।

अधिकरण कारक:

शब्द के जिस रूप से किसी के किसी अन्य में या पर आश्रित होने का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति चिह्न 'में', 'पर' है। मोनपा भाषा में भी अधिकरण कारक ज्ञात होता है, जिसे कु, मा, काङ, गा, नाप आदि विभक्तियों 6 का प्रयोग द्वारा इस अधिकरण कारक को प्रकट करते हैं।

उदाहरण रूप :

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
दुकान पर कोई नहीं था।	छोङकङ गा सुक्कङ मोने लो।
तुम्हारे घर पर चार आदमी हैं।	इतङकु खेमा मि ब्लि नी।
कमरे में लोग बैठे हैं।	खाङमी गा मिनङ ज़ुनि।
मेज पर किताबें रखी हैं।	ते चेगा लोपदेप नङ ञिनि।

संबोधन कारक:

शब्द के जिस रूप से किसी के पुकारे जाने का बोध हो उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसकी विभक्तियां हे, रे, अरे, ओ आदि का प्रयोग किया जाता है। मोनपा भाषा में भी इस कारक का प्रयोग सर्वथा किया जाता है, जिसकी अभिव्यक्ति के लिए वें , वेइदा, खेनचा, लामा ख्येन, ओञो आदि के द्वारा प्रकट किया जाता है।

उदाहारण-

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
मोहन ! इधर आओ।	वें ! मोहन ओचो शो।
अरे ! कुर्सी उठाकर लाओ।	वेंइ कुप्क्या यिया वोता।
हे ! ईश्वर दया करो।	लामा ख्येन ! ड्रो नङ बे।

हिंदी भाषा में संधियों का प्रयोग भी किया जाता है और समास भी परंतु मोनपा भाषा में केवल समास का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
राजपुत्र = राजा का पुत्र	तावाङपा = तावाङ का रहने वाला
इसी तरह	दिराङपा = दिराङ का रहने वाला।

मोनपा भाषा में लिंग सूचक शब्द तो है लेकिन वाक्य विन्यास के समय लिंग के अनुसार क्रिया परिवर्तित नहीं होती है।

उदाहरण-

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
हमने रोटी खाई। इसमे क्रिया 'खाई' है और वाक्य स्त्रीलिंग है।	ङतङ केप्तङ ज़सु। इसमें ज़सु क्रिया का प्रयोग एक ही तरह होता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष के लिए।
वह जा रहा है।	बि गइदुर। यहाँ 'गइदुर' क्रिया है।

हिंदी में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए शब्दों को इस प्रकार दिखाया जा सकता है –

एकवचन	**बहुवचन**
कुत्ता	कुत्ते
बिल्ली	बिल्लियां

ऐसे ही मोनपा भाषा में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए 'नङ' प्रत्यय का प्रयोग करते हुए बहुवचन बनाते हैं-

एकवचन	**बहुवचन**
खि (कुत्ता)	खिनाङ (कुत्ते)
मि (आदमी)	मिनाङ (आदमियों)
मुरि (साँप)	मुरिनाङ (साँपों)
इनङ (तुम)	इतङ (तुम लोग)

इस तरह मोनपा भाषा में बहुवचन बनाने के लिए एक 'नङ' प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस कारण मोनपा समुदाय जब हिंदी भाषा बोलते हैं, तब हिंदी के शब्द को बहुवचन बनाने में मोनपा भाषा का नियम को अपनाते हुए शब्दों का निर्माण कर जाते हैं। उदाहरण स्वरूप- सब्जियाँ को सब्जी लोग, गायों को गाय लोग, आलुओं को आलू लोग आदि का प्रयोग करते हैं, जो कि व्यकरण की दृष्टि से अशुद्ध है लेकिन संपर्क भाषा के रूप में हिंदी में इसी रूप के साथ व्यवहार में प्रयोग करने के आदी हो गए हैं, जो कि मोनपा समुदाय में नवीन

हिंदी के रूप में प्रयोग होता है। हिंदी में पूछे प्रश्न सब्जी का भाव क्या है? इसे मोनपा समुदाय वाले बड़ी मासूमियत से पूछते है सब्जी लोग कैसा दिया?

मोनपा भाषा में क्रिया-

क्रिया वाक्य का एक ऐसा पक्ष है, जिसके बिना वाक्य अधूरा रह जाता है। ऐसे भी वाक्य होते हैं, जिनमें क्रिया का घटक नहीं होता। इस घटक से किसी के विषय में कुछ विधान किया जाता है। इसमें अनेक प्रकार की व्याकरणिक कोटियों का समाहार होता है। यथा: पुरुष, वचन और काल। इस प्रकार भाषा में क्रिया का बड़ा महत्त्व है। क्रिया के संबंध में जो-जो तथ्यात्मक स्वरूप उद्घाटित हुआ है, उनसे संबंधित प्रमुख बातों को हिंदी तथा मोनपा दोनों भाषाओं को केंद्र में रखते हुए स्पष्ट कर सकते हैं। क्रिया वह है, जो विभिन्न व्याकरणिक कोटियों से प्रभावित होता है तथा जिसका प्रयोग विधेय के रूप में होता है। हिंदी को यथा: काल, वाच्य, अर्थ, पुरुष, लिंग एवं वचन आदि क्रिया को प्रभावित करती है। मोनपा भाषा-भाषी समुदाय का हिंदी प्रेम सराहनीय है। इस समुदाय के युवाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हिंदी-मोनपा अध्येता कोश का निर्माण देवनागरी लिपि में हुआ है।

मोनपा भाषा हिंदी भाषा के निकट होने के कई रूपों को देखकर यह पता चलता है कि क्रिया के आधार पर भी हिंदी भाषा और मोनपा भाषा नजदीक है। कुछ क्रियाओं के अधिक रूप हिंदी भाषा की अपेक्षा मोनपा भाषा में विस्तृत रूप में हैं। उदाहरण स्वरूप –

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
टोपी पहनो।	ज़ोम लुमा।
जूता पहनो।	ल्हाम युना।
कपड़ा पहनो।	पे गेना।

यहाँ हिंदी भाषा में एक ही क्रिया 'पहनो' से वाक्य स्पष्ट हो जाता है, लेकिन मोनपा भाषा में तीनों संज्ञाओं में क्रिया की भिन्नता है जिसे लुमा, युना और गेना तीन क्रियाओं के प्रयोग से वाक्य स्पष्ट हो जाता है। इसी तरह की अन्य क्रियाओं की भिन्नता भी मोनपा भाषा में देखने को मिलती है। उदाहरण स्वरूप –

हिंदी भाषा	**मोनपा भाषा**
पानी डालो।	छी लोगा।
चाय डालो।	जाह लोगा।
थुकपा पीयो।	थुकपा थोङा।
भात खाओ।	तो ज़ो।
सब्जी खाओ।	पा थोङा।

मोनपा भाषा में तरल भोज्य पदार्थों को हमेशा पीने के संदर्भ में 'थोङा' क्रिया द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इसी तरह ठोस भोज्य पदार्थों के लिए 'ज़ो' क्रिया द्वारा स्पष्ट किया जाता है। मोनपा भाषा में कई-कई जगह 'संज्ञा' के साथ ही 'कारक' शब्द जुड़े रहते हैं। उदाहरण–

हिंदी भाषा	मोनपा भाषा
बंगाल की खाड़ी।	बंगालुक लिङछेन।
खादी की टोपी।	खादीक ज़ोम/कमबइक ज़ोम।
घर की छत।	खेमुक चे।
लकड़ी का खम्भा।	शेङक कचिन।
बिजली का खम्भा।	लौ शेङक कचिन।
लोहे की खिड़की।	लेहक कोचुङ।
लकड़ी की खिड़की।	शेङक कोचुङ।

हिंदी भाषा की अपेक्षा मोनपा भाषा की क्रियाओं में बहुत सी विभिन्नता को प्रकट कर सकते हैं। इतनी विभिन्नता के होने के बावजूद मोनपा भाषा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिंदी भाषा के बहुत करीब है। व्याकरण की दृष्टि से, वर्णमाला की दृष्टि से, बोलने और समझने की दृष्टि से काफी समानता दिखाई देती है। क्योंकि मोनपा भाषा भी घरेलू बोलचाल की भाषा से विभाषा के पद पर आसीन होकर आज भाषा की श्रेणी में गिनी जाती है। जिस प्रकार बोली का अपना क्षेत्र होता है और भाषा की तुलना में शब्द भंडार कम होता है ठीक यही स्थिति मोनपा भाषा की भी है। एक कहावत है- " कोस-कोस में बदले पानी, चार कोस में वाणी। "ठीक यही स्थिति मोनपा के इन-इन क्षेत्रों- पङचिन मोनपा, तावाङ मोनपा, मागो मोनपा, दिरांग मोनपा, लिश मोनपा, भूट मोनपा, खलाकताङ मोनपा आदि में लागू होता है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों की लिपि भोटी लिपि अर्थात महायान बौद्ध संप्रदाय की लिपि को ही अपनाया जाता रहा है।

वर्तमान में भोटी लिपि को अरुणाचल सरकार ने पाँच (05) ज़िलों में- तावाङ, पश्चिम कामेङ, ऊपरी सुबनसिरी में तक्सिंग सर्किल, ऊपरी सियांग के टूटिंग क्षेत्र और शी योमी ज़िला के मेचुका क्षेत्र में कक्षा एक से लेकर कक्षा आठ तक तीसरे भाषा के रूप में माध्यमिक स्तर तक की पढ़ाई में अनिवार्य रूप से विद्यालयों में पढ़ाने का जिम्मा शुरू किया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में युवा वर्गों में इस लिपि के प्रति रूझान उत्पन्न होगा और वह इस लिपि को सीख पायेंगे। इसकी वजह यह लिपि संस्कृत से उत्पन्न हुई है और हिंदी हो चाहे अन्य भारतीय भाषाएं सभी की जननी संस्कृत भाषा है। मोनपा भाषा तो हिंदी के बहुत ज़्यादा करीब है, तो भोटी लिपि को अभी हम अपना ही रहे हैं। इस कारण वर्तमान समय अरुणाचल में अंग्रेजी, हिंदी, असमी और भोटी लिपि में लिखने वालों की संख्या भी कम नहीं है। अपने भाव जो जिस भाषा में जिस लिपि के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहते हैं, वह उन्हीं लिपियों का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है, जिसको सब लोग जानते हैं। इसलिए मोनपा भाषा को अगर लिपिबद्ध करना है तो देवनागरी और भोटी लिपि के द्वारा ही संभव होगा। रोमन लिपि में मोनपा भाषा का भाव या विचार प्रस्तुत करने में सक्षम अनुभव नहीं होता। अत: अंत में मैं यह आशा ही नहीं विश्वास करती हूँ कि यदि भाषाविद् लोग अच्छे ढंग से काम करें तो निश्चित ही मोनपा भाषा केवल तावाङ या पश्चिम कामेङ तक ही नहीं बल्कि महायान बौद्ध संप्रदाय की सभी क्षेत्रों की भाषा बनने की क्षमता मोनपा भाषा में है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी, भोलानाथ. (2012). *भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिंदी भाषा*. इलाहाबाद: किताबघर प्रकाशन.
2. त्रिपाठी, रामछबीला. (2018). *भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा*. दिल्ली: किताब महल.
3. तिवारी, पारसनाथ. *भाषा विज्ञान*.
4. प्रसाद, वासुदेवनंदन. (1959). *आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना* (13वाँ संशोधित संस्करण, 1977). पटना.
5. Wangchu, Lama. (2002). *An Introduction to Tawang Monpa Language*. Itanagar: Directorate of Research, Government of Arunachal Pradesh.
6. Dondrup, Rinchin. (1993). *Brokeh Language Guide*. Itanagar: Directorate of Research, Government of Arunachal Pradesh.
7. पाण्डेय, नरेंद्र कुमार (संपा०). (2019). *हिंदी–मोनपा अध्येता कोश*. आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान.

*(**लेखकीय परिचय :** डॉ. सोनाम वाङ्चू बीनी याङा शासकीय महिला महाविद्यालय, लेखी, नाहरलगुन, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सह प्रोफेसर हैं। आपकी संपादित की हुई दो पुस्तकें प्रकशित हैं- पहली, 'मोनपा लोक-साहित्य' और दूसरी, 'मोनपा अध्येता कोश'। मोबा: 7641032453, ई-मेल : sonamwangmo94809@gmail.com)*